विद्यापतिक कृतित्व

·BA I

Ist PAPER

महाकवि विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ रचनाकार छथि। ओ ई अपन रचना तीन भाषामे कयलनि — संस्कृत, अवहट्ठ तथा मैथिली। तीन भाषामे रचना करबाक मुख्य कारण छल तत्कालीन सामाजिक पारिवेशिक स्थिति। विद्वानक मध्य संस्कृत भाषा प्रचलित छल तेँ संस्कृतमे रचना भेल, सामान्य जनमानसक मध्य जे शिक्षित नहि छल अपन रचनाक प्रसार हेतु मैथिलीमे रचना कयलनि। तथा एहि दुनू भाषाक सम्वादक रूपमे अवहट्ठक रचना करल गेल। हिनक रचना सभकेँ निम्नलिखित रूपेँ वर्गीकृत कयल जा सकैत अछि।

संस्कृतमे रचित ग्रन्थ —

(1) भू-परिक्रमा → एहि ग्रन्थक रचना विद्यापति महाराज देव सिंहक आज्ञासँ कयलनि। सूत-वध जन्य ब्रह्महत्याक पापसँ महर्षि धौम्यक बलरामक पापमुक्त होएबाक लेल पृथ्वी-परिक्रमण करबाक हेतु कहैत छथि। तखन धौम्यक संग बलदेव पृथ्वीक परिक्रमण करैत छथि। जे भारतवर्षमे घुमैत-फिरैत दुनू मिथिला अबैत छथि, मार्गमे जे तीर्थ स्थान एवं पड़ैत अछि तकर वृत्तान्त महर्षि धौम्य बलदेवकेँ सुनबैत छथि। एहिमे यात्रा क्रममे कयल

गेल एक नगरसँ दोसर नगर प्रभृतिक उल्लेख भेल अछि। एहि कारणेँ इतिहास ओ भूगोल दुनू दृष्टिएँ एहि रचनाक महत्व अछि।

(ii) पुरुष-परीक्षा → कथाक माध्यमसँ नैतिक उपदेश देब भारतीय साहित्यक परम्परा रहल अछि जकर उदाहरण पञ्चतंत्र ओ हितोपदेश अछि। जतऽ पंचतंत्र ओ हितोपदेशमे पशु-पक्षीकेँ आधार बनाए कथा कहल गेल अछि ओतहि विद्यापतिक पुरुष परीक्षा ऐतिहासिक पुरुष लौकिक जीवन वृत्तान्त पर आधारित अछि। एहि ग्रन्थक रचना महाराज शिव सिंहक आज्ञासँ कयल गेल।

'पुरुष-परीक्षा' चारि परिच्छेद चारि परिच्छेदमे विभाजित अछि। पुरुष-लक्षणक अनुसार प्रथममे वीर, दोसरमे सुबुद्धिक, तेसरमे सविद्य आ चारिम परिच्छेदमे पुरुषार्थक प्रतिपादक कथा अछि। कवि एकर नामक सार्थकताक प्रसंग कहैत छथि → 'पुरुषः परीक्ष्यते येन स्यात् परीक्षया। तत पुरुष परीक्षेयं कथा सर्वमनः प्रिया।'

(iii) शैव सर्वस्वसार → महाराज

Scanned with CamScanner

पद्म सिंहक पत्नी महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ विद्यापति सेहो ग्रन्थक रचना कयलनि। ग्रन्थक आरम्भमे विश्वास देवीक यशोगान अछि। एहि ग्रन्थमे शिव पूजा सम्बन्धी विधि-विधानक वर्णन कएल गेल अछि।

(iv) गंगावाक्यावली → महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ निर्मित विद्यापति क दोसर कृति छनि गंगावाक्यावली। एहिमे गंगाक स्मरण कीर्तन यात्रा स आरम्भ कए गंगा तट पर प्राण विसर्जन धरिक विधि-विधानक वर्णन कएल गेल अछि। ग्रन्थक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे विश्वास देवीक रचित जे निबन्ध छल तकरहि प्रमाण श्लोकसँ पुष्ट कए विद्यापति पूर्णता प्रदान कयलनि।

(v) विभागसार → एहि ग्रन्थक रचना महाराज नरसिंह दर्पनारायणक आज्ञासँ कएल गेल ~~अछि~~। दायभाग पुत्र-लक्षण निरूपण, अपुत्र धनकारी निरूपण तथा स्त्री धन-विभाग निरूपण आदिक विषय एहिमे अछि। एहिसँ मिथिलाक दायभाग पर पर्याप्त प्रकाश पड़ल अछि।

(vi) दानवाक्यावली → एकर रचना नरसिंह देवक पत्नी धीरमतिक आज्ञासँ भेल। अनेक प्रकारक दान होइत अछि तकर विधि-विधान एहिमे अछि। देश, काल ओ पात्र आदिक विशद विवेचन सेहो एहि मध्य भेल अछि।

(vii) दुर्गाभक्तितरंगिणी → महाराज भैरवसिंहक आज्ञासँ एहि ग्रन्थक रचना भेल। ई पोथी दू तरंगमे अछि। प्रथम तरंगमे गृह-निर्माण, प्रतिमा निर्माण आदि विविध-विषयक विशद विवेचन भेल अछि एवं दोसर तरंगमे शास्त्रीय दुर्गापूजाक विधि-विधानक वर्णन अछि।

(viii) लिखनावली → एहि ग्रन्थक रचना पुरादित्यक आज्ञासँ विद्यापति कयलनि। एहिमे पत्र लिखबाक परिपाटीक उल्लेख अछि। लिखनावलीक पत्रसँ मिथिलाक तत्कालीन सामाजिक आओर सांस्कृतिक अवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पड़ैत अछि।

(ix) गया-पत्तलक → एहिमे गया श्राद्ध सम्बन्धी विधि-विधानक वर्णन अछि। ग्रन्थमे कतहु कोनो राजाक नामोल्लेख नहि अछि जाहिसँ सिद्ध होइत अछि जे एकर रचना

सकल लोक कल्याणार्थ कयल गेल।

(X) वर्षकृत्य → एहिमे वर्ष भरिक पावनि तिहारक वर्णन अछि। एकर रचना अनुमानतः रूपनारायण चन्द्र सिंहक आज्ञासँ भेल।

(XI) व्याड़ि-भक्ति तरंगिणी → इहो ग्रन्थ दुर्गाभक्ति तरंगिणीक शैलीमे लिखल गेल अछि। एहिमे इष्ट सर्प पूजाक विधि-विधानक वर्णन अछि। एहि ग्रन्थक रचना रूपनारायण सिंहक राज्यकालमे भेल।

(XII) मणिमंजरी → एकर रचना संस्कृत नाट्यशास्त्रक आधार पर विद्यापति कयलनि। एहिमे राजा चन्द्रसेन ओ हुनिक चन्द्रकलाक पुत्रीक मणिमंजरीक स्वप्न दर्शनसँ लऽ इन्दुक विवाह धरिक घटनाक पूर्ण वर्णन कयल गेल अछि।

अवहट्ठ कृति

(i) कीर्तिलता → विद्यापतिक कीर्तिलताक अवहट्ठ साहित्यमे महत्वपूर्ण स्थान अछि। भाषाक दृष्टिएँ एवं तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक

Scanned with CamScanner

अवहट्ठक विशुद्ध नियाक दृष्टिएँ एकर विशेष महत्व अछि। एहिमे कीर्तिसिंहक पिता गणेश्वरक मृत्यु, कीर्तिसिंहक विजयश्री राज्याभिषेक आदिक वर्णन अपभ्रंशभाषा में कएल गेल अछि।

(ii) कीर्तिपताका → ई विद्यापतिक द्वारा अवहट्ठ कृति थिक। एकर खण्डित भाग प्राप्त भेल अछि। एहि मध्य शिवसिंहक यश प्रशस्तिक वर्णन भेल अछि।

मैथिली रचना.

(i) गोरक्ष विजय → गोरक्ष विजय आदि कालक 'नियमित' मैथिली नाटकक शैलीमे लिखल गेल अछि। जे बादमे कीर्तनिआ नाटकक आधार बनि गेल। एहि नाटकक रचना महाराज शिवसिंहक आज्ञासँ भगवान भैरवक प्रसादार्थ कएल गेल। एहि नाटकक कथावस्तु इएह अछि जे मत्स्येन्द्र नाथक गोरखनाथ कायारूपमे आनुका रमणीक प्रति आसक्त भए भोग-विलास करैत छथि आ अपन शिष्य समक्ष द्वारा उद्धार कएल जाइत छथि। एकर माध्यमसँ मैथिली नाटकक विकासक्रम स्पष्ट रूपेँ दृष्टिगोचर होइत अछि

(ii) मैथिली पद → महाकवि जाहि नामे प्रसिद्ध मैथिक हिनक रचित पदावली। हिनक पदावली मिथिलाञ्चलक संग-संग नेपाल बंगाल, असम तथा उड़ीसाक कविलोकनिकेँ नवीन प्रेरणा सेहो प्रदान कएल।

हिनक पदावली निम्न स्रोतसँ उपलब्ध होइत अछि —

(i) नेपाल पदावली (ii) रामभद्रपुर पदावली (iii) तरौनी पदावली (iv) रागतरंगिणी (v) भाषा गीत संग्रह (vi) नानारस गीत (vii) वैष्णव पदावली (viii) लोककंठमे उपलब्ध पद।

विद्यापतिक कोमलकांत पदावली वैयक्तिकता, संक्षिप्तता, भावाभिव्यक्तिगता, स्वाभाविकता, संगीतात्मकता तथा भाषाक सुकुमारता एवं सरलताक अद्भुत निदर्शन प्रस्तुत करैत अछि। वर्ण्य विषयक दृष्टिसँ हिनक पदावली एक दिस हिनका रससिद्ध, सिद्ध एवं मर्यादा कविक रूपमे प्रेमक उपासकक सिद्धहस्त कलाकार सिद्ध करैत अछि तँ दोसर दिस भक्त कविक रूपमे शास्त्रीय मार्ग एवं लोकमार्ग दुनूमे सामंजस्य उपस्थित करनिहार एकटा विशिष्ट भक्त हृदयक चित्र सेहो उपस्थित करैत अछि।

मिथिला मैथिलीक जातीय

एवं सांस्कृतिक [illegible]
साहित्यिक जागरण [illegible]
रूपमे आराध्य एवं आराधित महाकवि
विद्यापतिक रचना मध्यकालीन मैथिली
साहित्यक अनुपम निधि अछि।

अस्तु,।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग,
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर (मधुबनी)

Scanned with CamScanner